नागेश्वरी
जन्मतिथि- 06.08.1960
जन्मस्थान - चक्रधरपुर (झारखण्ड)
पिता का नाम- जी. एम. डी. मूर्ती
माता का नाम- जी.सीताम्मा
मोबाइल नम्बर - 9234704702

गीता पावन ग्रंथ में,भरा ज्ञान भंडार।
करते है सम्मान भी ,जाने जीवन सार।।
जाने जीवन सार,कर्म फल से मत जोड़ो।
दान यज्ञ तप मान, तीन गुण को तो छोड़ो।।
निमित्त मात्र शरीर,मोह माया जो जीता।
मुख वाणी भगवान,पाठ नित कर लो गीता।।
****

जागो आया शुभ दिवस लेकर हरि का नाम।
सही समय को देख कर,शुरू करो अब काम।।
शुरू करो अब काम,भाग्य के बनो विधाता।
भरे जोश आवाम,मनुज हर फर्ज निभाता।।
रखें लक्ष्य पर ध्यान,कभी डर कर मत भागो।
कर लो निज पहचान,समय रहते सब जागो।
****

रंग बिरंगें फूल है,लगते है मन भाव।
सभी पुष्प की चाह है,पड़े वीर का पाँव।।
पड़े वीर का पाँव,देश का करते रक्षा।
देते है बलिदान,रखे वे अपनी दक्षा
झुकी डाल जो फूल,देख फिर भी है चंगे।
बाग करे गुलजार,सजा पथ रंग बिरंगे।।
****

बेटी घर की शान है ,ईश्वर का उपहार।
उभय कुलों की मान से,करें सृष्टि संचार।।
करें सृष्टि संचार,रूप इसके बहुसारे।
पत्नी बहना मातु,सभी रिश्ते हैं प्यारे।।
लक्ष्मी का अवतार, समझ मत कोई चेटी।
भारत का अभिमान, गगन में उड़ती बेटी।।
****

रानी बिटिया भाग्य से, मिलती है सब जान।
शिक्षा से होता सदा,बेटी का उत्थान।।
बेटी का उत्थान,चढ़ा शिक्षा का गहना।
करना स्वयं विकास, स्वावलम्बी अब रहना।।
सुता पिता की जान,नहीं करती मन मानी।।
करती सबसे नेह,गेह की बिटिया रानी।।
****

मंगलमय हो शुभ दिवस, करना शुचि संकल्प।
सेवा करना देश की,समय मिला है अल्प।।
समय मिला है अल्प,बना जीवन उपयोगी।
मातृभूमि का कर्ज,भूलना मत हे भोगी।।
तन मन धन -कुर्बान,धरो पग होकर निर्भय।
पुण्य धरा का मान, करें मिलकर मंगलमय।।
****

ताला मुख पर तो लगा,करना है कम बात।
कुशल क्षेम बस पूछ लो,न कभी पूछो जात।।
न कभी पूछो जीत,भेद मत मानव करना।
एकमेव की भाव, प्रेम धारा से बहना।।
सबका खून समान, दूर कर तम का काला।
छोड़ अंधविश्वास, तोड़ हर मुश्किल ताला।।
****

आराधन कर मातु की, मिलती कृपा अपार।
नौ दुर्गा के रूप की, बोलो जय जयकार।।
बोलो जय जयकार,भक्त की भाग्य विधाता।
दुष्टों का संहार, देवताओं की त्राता।।
कर दो नैया पार, मुक्ति पथ की तुम साधन।
जीवन करें निहाल, ध्यान से कर आराधन।।
****

बेटा बेटी फर्क क्यों,दोनों एक समान।
बच्चे नाजुक फूल हैं,सृष्टि ईश का जान।।
सृष्टि ईश का जान,यही सत है सब जानो।
चले पुत्र से वंश,रूप स्त्री का पहचानो।।
दोनों हैं वरदान,समझ मत कोई चेटी।
कभी करो मत भेद, देख सम बेटा बेटी।।
****

बिटिया घर की लाड़ली, इसमें प्रेम अथाह।
संबंधों को बाँध कर,रिश्ते रही निवाह।।
रिश्ते रही निवाह, दया सब पर है करती।
बेटा बेटी फर्क, रखो मत मानो धरती।।
समझो मत अभिशाप,मान आँगन की चिड़िया।
आज देश की शान,पदक पहनी है बिटिया।।
****